समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

राजनीति की बहस मे नैतिकता की गिरावट : लोकतंत्र और समाज के लिए बढ़ती चुनौती

Publisher

Published on | 15 Sep 2025

हाल ही में एक प्रमुख खबरिया चैनल पर राजनीतिक बहस के दौरान नैतिकता और आचार का पतन एक बार फिर सुर्खियों में आया। बहस का स्वर ऐसा था कि दर्शकों ने महसूस किया कि राजनीतिक बहस अब केवल मुद्दों पर चर्चा का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि व्यक्तिगत हमलों, कटु टिप्पणियों और सनसनीखेज संवाद का अड्डा बन गई है। इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल उठाया कि राजनीति और समाज में नैतिकता कब से गिर रही है और आज तक क्यों इस पर गंभीर चिंतन नहीं हुआ।

राजनीतिक बहस का मुख्य उद्देश्य जनता को सटीक जानकारी देना, मुद्दों की गहराई समझाना और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में योगदान करना होना चाहिए। लेकिन हाल के वर्षों में कई टीवी चैनलों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर यह बहस अक्सर व्यक्तिगत आरोप, धमकियों और सनसनीखेज दावों तक सिमटकर रह गई है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह गिरावट केवल टीवी या सोशल मीडिया तक सीमित नहीं है। यह समाज के राजनीतिक संवाद और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में एक चिंता का विषय बन चुकी है। बहस में अब तर्क और तथ्य की बजाय बयानबाजी, विवाद और नकारात्मकता अधिक दिखाई देती है।

लेखक और सामाजिक विश्लेषकों का मानना है कि राजनीतिक बहस में नैतिकता का पतन सीधे समाज पर असर डालता है। जब नेता और विशेषज्ञ व्यक्तिगत हमलों या आरोपों में उलझ जाते हैं, तो जनता में निराशा और अविश्वास बढ़ता है। इससे लोकतंत्र की मूल भावना—विचारों के आदान-प्रदान और न्यायसंगत निर्णय—पर खतरा उत्पन्न होता है।

सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसार, मीडिया और सार्वजनिक बहस का स्वर नागरिकों की सोच और व्यवहार को प्रभावित करता है। यदि बहसें नैतिकता और तर्क की बजाय विवाद और अपशब्दों में व्यस्त हों, तो यह समाज में कट्टरता, विभाजन और नकारात्मकता को बढ़ावा देता है।

राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि नैतिकता के पतन के पीछे कई कारण हैं। इनमें शामिल हैं:

1. **सनसनीखेज मीडिया का दबदबा :** चैनलों और प्लेटफॉर्म्स पर दर्शक बढ़ाने के लिए विवादित बहसें और व्यक्तिगत आरोप अधिक दिखाए जाते हैं।
2. **राजनीतिक दलों का रुख :** कई बार राजनीतिक दल बहस को केवल प्रचार का माध्यम बनाते हैं और मुद्दों के समाधान की बजाय विरोधी को नीचा दिखाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

3. **सोशल मीडिया का प्रभाव :** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर तुरंत प्रतिक्रिया और वायरल होने की होड़ ने बहस को अधिक कठोर और विवादास्पद बना दिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय है। जनता सही जानकारी पाने के बजाय भावनाओं और सनसनी पर अधिक भरोसा करने लगती है, जिससे राजनीतिक निर्णय और विचार प्रभावित होते हैं।

इस स्थिति में नैतिक बहस की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण हो गई है। लेखक और विश्लेषक बताते हैं कि राजनीतिक बहस में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना जरूरी है:

- **तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित चर्चा:** बहस का मुख्य उद्देश्य जनता को सटीक जानकारी देना होना चाहिए।
- **व्यक्तिगत आरोपों से बचाव :** किसी भी बहस में व्यक्तिगत टिप्पणियों और अपशब्दों का प्रयोग लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।
- **सतत संवाद और समाधान केंद्रित दृष्टिकोण :** बहस केवल आलोचना या विरोध नहीं, बल्कि समाधान और विचार साझा करने का माध्यम हो।

यदि राजनीतिक बहसें नैतिक और तथ्यपरक हों, तो यह न केवल लोकतंत्र को मजबूत बनाएगी बल्कि समाज में विश्वास और सहयोग की भावना भी बढ़ाएगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि मीडिया और राजनीतिक दलों को मिलकर इस गिरावट को रोकना होगा। इसके लिए जरूरी है कि बहसों का स्वर विनम्र, तथ्यपरक और नैतिकता आधारित हो। शिक्षा और नागरिक चेतना भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

समाज और राजनीतिक विश्लेषकों का यह मानना है कि यदि जनता नैतिकता और तर्क की ओर ध्यान केंद्रित करे, तो राजनीतिक बहस में सुधार संभव है। इसके लिए मीडिया चैनलों, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और राजनीतिक दलों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

राजनीतिक बहस में नैतिकता की गिरावट केवल मीडिया का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र और समाज की मजबूती के लिए चुनौती बन गई है। सनसनीखेज बहसें, व्यक्तिगत आरोप और अपशब्द समाज में नकारात्मकता और अविश्वास को बढ़ा रहे हैं।

DISCLAIMER: THE VIEWS/CONTENTS EXPRESSED/PRESENTED HEREIN, WITHIN THIS ADVERTORIAL AND PROMOTIONAL FEATURE ARE THE SOLE AND EXCLUSIVE RESPONSIBILITY OF INDIVIDUAL CLIENTS/EXPERT/THEIR AUTHORISED REPRESENTATIVE/PUBLISHER, TO WHICH EFFECT, PUBLICATION HOUSE/ITS REPRESENTATIVE/AFFILIATES ARE NOT RESPONSIBLE/LIABLE WHATSOVER.